गुरु नानक – सबद ३४

इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ७

इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥
लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥
एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ॥
सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥
नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥

सार: ब्रह्मांड का मौलिक नियम एकता में बंधा हुआ है, जो इस बात पर ज़ोर देता है कि हमारी इंद्रियों के दायरे से परे सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ है। प्रत्येक विचार, क्रिया और स्थितियां आपस में गुंथी हुई हैं।

इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥
अगर एक जीभ कई गुना बढ़कर असंख्य जीभ बन जाए।

लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥
ये असंख्य जीभें बार-बार उल्लेख करे कि जागरूकता, हर जगह मौजूद एक ही सर्वव्यापी शक्ति से उत्पन्न होती है।

एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ॥
इस पथ पर, व्यक्ति सृजन के साथ जुड़ाव का सम्मान करने के लिए स्वयं की प्रगति के लिए आगे बढ़ता है।

सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥
जो दोहरेपन की निचली अवस्था में हैं, सृष्टि की विशालता के बारे में सुनकर उन प्रबुद्ध लोगों की तरह बनने की इच्छा रखते हैं जिन्होंने एकता की उच्चतम अवस्था को पार कर लिया है।

नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥

नानक कहते हैं कि एकता की प्राप्ति केवल आत्म-चिंतन की कृपा से ही संभव है और अन्य सभी प्रयास व्यर्थ हैं और केवल झूठे गर्व की ओर ले जाते हैं। (३२)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि यदि कोई आत्म-चिंतन के विनम्र गुण को नहीं अपनाता है, तो सृष्टि के सार को समझने के अन्य सभी प्रयास व्यर्थ हैं, क्योंकि 'हम' पर 'मैं' का अहंकार सच पहचानने की क्षमता में बाधा उत्पन्न करता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com